

भारतीय शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान का समावेश : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२०**डॉ.लोकपति त्रिपाठी**

असि. प्रोफेसर बी.एड.

काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय ज्ञानपुर, भदोही।

शोध सारांश :

भारतीय शिक्षा प्रणाली अपने जड़ों की ओर लौट रही है। जो भविष्य में मैकालियन शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से बदलकर अपने अतीत की जड़ों को पहचानना उसे आत्मसात कर गुलामी की मानसिकता को त्यागना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में छात्रों को अपनी स्थानीय भाषा में भारतीय ज्ञान, दर्शन, कला, साहित्य, परम्परागत ज्ञान को लचीलेपन, उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ साथ बहुविषयक दृष्टिकोण आधारित शिक्षण अधिगम व्यवस्था को अपनाया है। जो उज्ज्वल भविष्य की ओर की ओर एक सुखद तस्वीर प्रस्तुत करती है। इस तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अर्थ के स्वरूप को पूरी तरह से बदल देगा। जो शिक्षा क्षेत्र अभी तक समाज या व्यक्तियों के आर्थिक हितों से जुड़ा हुआ था। वही राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० मानव जीवन के सर्वांगीण विकास लिए सभी आवश्यक पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। इनमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय, पहलुओं को शामिल किया गया है, जो शिक्षार्थियों को पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाते हुए एक स्थायी जीवन जीने का तरीका सीखकर समाज के एक जिम्मेदार और खुशहाल नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० भावी पीढ़ियों में पारंपरिक ज्ञान के खोए हुए मूल्यों को लौटाने एवं उसे बढ़ावा देने का वादा करती है। इसमें प्राचीन पारंपरिक ज्ञान को आत्मसात करने के लिए सरकार द्वारा की गई महत्वाकांक्षी पहलों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। साथ ही, प्रस्तुत लेख में अन्य राष्ट्रों द्वारा अपने भिन्न भिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप को किस प्रकार से संरक्षित किया गया है उनके द्वारा अपनाए गये सफल महडलों पर भी लेख में चर्चा किया गया है। इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के ढांचे की ताकत और कमजोरियों का उल्लेख किया गया है, हालांकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में भारतीय पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित एवं सम्बर्धित देने की दिशा में एक उत्कृष्ट कदम है, लेकिन समकालीन संसार में भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन किस प्रकार से स्थापित करेंगे इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द- भारतीय ज्ञान परम्परा, स्वदेशी ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान, आयुर्वेद, योग, औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, सतत विकास, बहुसंस्कृतिवादी

परिचय

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्वदेशी ज्ञान एवं पारंपरिक ज्ञान अक्सर एक दूसरे के पर्याय के रूप में पर प्रयोग होते हैं किन्तु दोनों में अन्तर यह है कि स्वदेशी ज्ञान विशेष रूप से किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र या विशिष्ट संस्कृति से संबंधित होता है, जो हजारों वर्षों से अपनी परम्परागत जीवन शैली को पर्यावरण के साथ गहरे जुड़ाव के साथ विकसित हुआ है जबकि पारंपरिक ज्ञान स्वदेशी एवं गैर

स्वदेशी जो दीर्घकाल से प्रथाओं परम्पराओं को मौखिक एवं अनुभव से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते चला आ रहा है। जिसे हमारे पूर्वजों ने जीवन के कौशल को समरसता के साथ अनूठे तरीके से समाज एवं पर्यावरण के साथ स्थायी सामंजस्य विकसित किए थे। जिसमें प्राकृतिक परिवेश की समस्याओं से लेकर अध्यात्मिक जीवन के सभी पहलुओं के बीच सम्बन्ध को पहचानकर उससे निपटने के लिए पारंपरिक ज्ञान का अमूल्य योगदान रहा है। इसका महत्व न केवल हजारों

साल पहले के अतीत में था, बल्कि हजारों साल बाद भी इसका उतना ही रहेगा। जिसे हमारे पूर्वजों ने स्थायी रूप से जीने के लिए नाजुक संतुलन बनाए रखा था, आज उसे उचित शिक्षा द्वारा संरक्षित एवं सर्वर्धित करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। यहाँ, संरक्षण पर जोर देने का मेरा आशय केवल ज्ञान के उन अंशों को किताबों या संग्रहालयों में जीवित रखने से नहीं है, बल्कि उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना है जिससे उन्हें अपने पूर्वजों के मूल्यों को पहचान कर आत्मसात कर सकें। इसी प्रकार सर्वधन के लिए, वैश्विक स्तर पर एक सहयोगी और केंद्रित प्रयास की आवश्यकता है।

शिक्षा व्यक्ति को अपने की समाज की जड़ों से जुड़े रहते हुए प्रगति करने का अवसर प्रदान करती है। जो उसे विशिष्ट ज्ञान, कला कौशल, शिल्प, वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचार जैसी गतिविधियों को अपनी मातृभाषा के माध्यम से पारंपरिक तरीकों द्वारा सीखने और समझने में सक्षम बनाता है। जिसे संयुक्त राष्ट्र ने भी पर्यावरणीय स्थिरता के लिए स्वदेशी ज्ञान के महत्व को स्वीकार किया है और कहा है “पारंपरिक और स्वदेशी ज्ञान, परिस्थितियों से अनुकूलन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। (संयुक्त राष्ट्र कार्य दल, २०१२) “राष्ट्र के विकास में विचारशील और संवेदनशील नागरिकों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है” (यूनेस्को, २००६)। मानव जाति के विकास में भारतीय पारम्परिक ज्ञान प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसके माध्यम से देश के सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक विकास एवं जैव विविधता का संरक्षण, जलवायु परिवर्तन से जीवन को संतुलित करने, समानता, समरसता एवं सम्मान के साथ ज्ञान एवं कला कौशल का संरक्षण के लिए भरसक प्रयास कर रही है। किन्तु इंटरनेट अहफ थिंग्स के युग में ऐसी प्राचीन परंपराओं और संस्कृतियों को सुरक्षित रखने के लिए संघर्ष कर रही हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान, के संरक्षण को लागू करते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अक्सर यह देखा गया है कि औपचारिक शिक्षा प्रणाली ने पारंपरिक ज्ञान को कमजोर किया है। क्योंकि इसमें बहुलता के बजाय एकरूपता पर जोर दिया गया है। उदाहरण के लिए २०वीं सदी की शुरुआत से ही “अमेरिका, कनाडा और अहस्ट्रेलिया ने स्वदेशी ज्ञान की अविश्वसनीय रूप से

हानि दिखाई दी तब इन देशों की सरकारों ने अपने बच्चों का समाज के मुख्यधारा से आत्मसात करने के प्रयास में आवासीय विद्यालयों, बोर्डिंग स्कूलों या छात्रावासों में भेज दिया। (ओहमगरी और बर्कस, १९६७ रेड्टमर और एडर, २०१५. आर्मिटेज, १९६५)। इसी प्रकार २१वीं सदी के शुरुआत से ही दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया, लैटिन अमेरिका आदि जैसे देशों ने अपनी शिक्षा नीतियों में बदलाव करके कुछ सकारात्मक कदम उठाए हैं। और कुछ देशों ने औपचारिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान एवं परम्परागत ज्ञान को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया, लेकिन उनके हितों की रक्षा करने में विफल रहे जिसके कारण उनके प्रतिकूल परिणाम सामने आए। इसके विपरीत, अन्य शिक्षा महडलों ने अधिक सफल परिणाम दिए उदाहरण के लिए अहस्ट्रेलिया द्वारा स्वदेशी ज्ञान को औपचारिक शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने का एक असफल पहल की गई थी। दूसरी ओर, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन देशों ने अंतर-सांस्कृतिक बहुभाषी शिक्षा महडलों के कार्यान्वयन का, सफल एकीकरण महडल प्रस्तुत किया (यूनेस्को, २०१६)।

उच्च शिक्षा संस्थानों में डिग्री और मास्टर कार्यक्रमों द्वारा स्वदेशी लोगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए दोनों प्रणालियों (पश्चिमी और स्वदेशी दोनों) के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध का मार्ग प्रशस्त हुआ है (यूनेस्को, २०१६)। जैसे मेक्सिको के सांस्कृतिक विश्वविद्यालयों ने अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने स्वदेशी भाषाओं, संस्कृतियों और विश्वदृष्टि पर शोध करने में रुचि रखने वाले और सर्वोत्तम समुदाय विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध पेशेवरों को प्रशिक्षित करने के लिए एक मंच प्रदान किया है। ऐसा ही पहल अलास्का के रूलर सिस्टमैटिक ने की है जो बच्चों को कक्षाओं में भावनात्मक रूप से मजबूत बनाता है। इसके लिए बच्चों की शिक्षा में माता-पिता और बड़ों की अनुभवजन्य शिक्षा, सांस्कृतिक शिविर, सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी स्कूलों के लिए मानक और मूल शिक्षक संघ जैसी अनेक गतिविधियों में भागीदारी के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान को शिक्षा की मुख्यधारा में एकीकृत करना था।

भारत ने भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक और सांस्कृतिक विरासत को औपचारिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम में शामिल करने

का एक ऐतिहासिक और बहुप्रतीक्षित कदम बढ़ाया है। जिससे छात्रों में अपनी जड़ों से जुड़ाव बढ़े तथा शिक्षा को और अधिक प्रासंगिक तथा समावेशी बनाया जा सके। और ये ऐतिहासिक प्रयास संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य २०१५ का परिणाम हैं, जिसमें सतत विकास लक्ष्य ४, पर भारत ने उसी समय हस्ताक्षर किए थे। जिसमें समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने को प्रावधान है और २०३० तक सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है (सतत विकास एजेंडा २०३०)। (संयुक्त राष्ट्र महासभा, २०१५)“ इस शिक्षा नीति (एनईपी २०२०) में अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति के माध्यम से अधिकांश तकनीकी पहलुओं, जैसे कला, संस्कृति, पदानुक्रम, वैज्ञानिक और बहुभाषी ज्ञान को शामिल करने का प्रयास किया गया है।

१८३५ में जब थामस बैबिंगटन मैकाले ने अपना मिनट आन एजुकेशन लिखा तब शायद उसे भी यह अनुमान नहीं था कि भारत की शिक्षा संरचना भाषा विचार और मानसिकता को इतनी गहराई तक प्रभावित करेगी। जो बच्चों अपनी ज्ञान परम्परा को स्थानीय भाषा में सोचता, सीखता और जीवन कौशल एवं ज्ञान अर्जित करता था। उसे औपचारिक शिक्षा अंग्रेजी भाषा शिक्षण का माध्यम होने से यहाँ के लोगों की स्थानीय भाषाओं में रुचि कम हो गई। क्योंकि औपनिवेशिक पाठ्यक्रम का मुख्य ध्यान विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर था, इसलिए यहाँ की स्थानीय सांस्कृतिक ज्ञान या पारंपरिक कलाओं के संरक्षण करने में काफी हद तक उपेक्षा की गई। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को भारतीय धरती पर लागू करने के बाद, फारसी और संस्कृत में किए जाने वाले अनुवाद और कार्य पूरी तरह से बंद कर दिए गए। सभी सरकारी भर्तियों में अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य हो गया था। स्वतंत्रता के बाद भी, शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण के कारण, ज्यादातर प्रकाशन अंग्रेजी पत्रिकाओं से जुड़ा हुआ है। भाषाई विविधता की कमी कई स्थानीय लेखकों और नए शोधकर्ताओं को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बड़ी कठिनाइयों का सामना कराना पड़ता है। औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियाँ, शिक्षण की भाषा, मूल्यांकन रणनीतियाँ, संकाय का रवैया, भारतीय ज्ञान परम्परा पर नकारात्मक प्रभाव डाला क्योंकि इस प्रणाली में बहुलता के बजाय एकरूपता

पर ज्यादा जोर दिया गया है। इसलिए, औपचारिक शिक्षा प्रणाली में विविधता और स्वदेशी भागीदारी को बढ़ावा देने की इस समस्या से निपटने के लिए, कुछ देश आगे आए और एक समावेशी शिक्षा प्रणाली लागू करने का प्रयास किया। सभी को सफल परिणाम तो नहीं मिले, लेकिन उन्होंने महत्वपूर्ण सबक सिखाए। ऐसे असफल और सफल प्रयास इस प्रकार हैं।

विभिन्न देशों द्वारा स्वदेशी ज्ञान के संरक्षण के लिए किये गये प्रयोगों का अध्ययन-

ऑस्ट्रेलिया में, योलंगु समुदाय के युवाओं की स्कूली शिक्षा, उपलब्धियों और कल्याण से संबंधित मुद्दों एवं उनकी सांस्कृतिक पहचान और अखंडता को बनाए रखने के उद्देश्य से ऐसी शिक्षा परियोजनाएँ चल रही हैं किन्तु योलंगु समुदाय के बुजुर्गों से बिना परामर्श किए उत्तरी क्षेत्र के शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा स्कूल के स्टाफ को उन पर जबरन थोपने से अहम्ट्रेलियाई सरकार और योलंगु समुदाय के बीच तनाव पैदा हो गया। समुदाय स्कूल स्टाफ चुनने के अधिकार की रक्षा कर रहा था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके समाज और संस्कृति के प्रति नेक इरादे और सम्मानजनक दृष्टिकोण वाले लोगों को नियुक्त किया जाए। इस तरह के तनाव सामंजस्य स्थापित करने के प्रयासों में विफल रहे, और परियोजना कभी लागू नहीं हो पाई, जो निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्वदेशी समुदायों की अनुपस्थिति के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।

शिक्षा नीतियों के निर्माण में स्वदेशी ज्ञान की सार्थकता एवं प्रासंगिक को सुनिश्चित करने एवं उनके सफल कार्यान्वयन के लिए सामुदायिक सदस्यों की सक्रिय भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसा कि अंतरसांस्कृतिक विश्वविद्यालय पहल और अलास्का रूरल सिस्टमैटिक पहल ऐसे दो सफल शैक्षिक महडल हैं। जो शैक्षिक सुधारों के प्रति जन भागीदारी की सकारात्मक प्रभाव की मिशाल प्रस्तुत करते हैं। योजना बनाना, निर्णय लेने की प्रक्रिया और विभिन्न संबंधित हितधारकों के बीच परस्पर सम्मान की भावना इन महडलों की विशेषताएँ हैं,। ऐसी पहल जिसमें स्वदेशी भाषाएँ भी शामिल हो सांस्कृतिक विविधता को प्रतिबिंबित करती हो ऐसी शिक्षा प्रणाली देश को गति प्रदान करती हैं, (स्टेवनहेगन, २०१५)। इसी प्रकार

दक्षिण अफ्रीका में, नई शिक्षा नीति २००५ के तहत, विज्ञान के पाठ्यक्रम के साथ स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करना अनिवार्य है। इस नीति को लागू करने के लिए शिक्षकों को एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को अनिवार्य किया गया था शुरूआत में शिक्षक इस स्वदेशी ज्ञान के साथ साथ आधुनिक विज्ञान को एकीकृत करने एवं अनुप्रयोग के प्रति विरोध कर रहे थे, किन्तु प्रशिक्षण के बाद ज्ञान प्रदान करने की दोनों प्रणालियों को संगत और पूरक पाया (ओगुन्नीयी, २००७)। इसी प्रकार, नाइजीरिया की स्कूली शिक्षा में अफ्रीकी स्वदेशी ज्ञान को एकीकृत करने और शिक्षा संरचना की पुनर्संरचना के लिए शिक्षाविदों ने सार्थक परिवर्तनों के लिए एकीकृत शिक्षण प्रणाली को अपना कर स्थानीय शिक्षा पर जोर दिया (ए०जे० एवं अन्य, २०१३) जिसमें बौद्धिक ज्ञान को रचनात्मक तरीकों जैसे खेल द्वारा सीखना, मौखिक साहित्य, संगीत और कहावतें शामिल हैं और साथ ही उत्पादक कार्यों को सीखना भी शामिल है। ज्ञान हस्तांतरण की औपचारिक प्रक्रिया में कौशल का सैद्धांतिक और व्यावहारिक समावेश शामिल है।

उपरोक्त महडलों के समर्थन में यूनेस्को ने भी विभिन्न देशों की सरकारों को अपने शिक्षा नीतियों में आधुनिक ज्ञान के साथ स्वदेशी ज्ञान की समावेशन का सुझाव दिया है, जिससे शिक्षा सभी लोगों को “सीखने के समान शिक्षा के अवसर” के रूप में उपलब्ध हो सकें (यूनेस्को, २००७)। यूनेस्को व्यक्तियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं- जैसे शारीरिक मानसिक, संज्ञानात्मक, के साथ साथ स्थानीय लोगों की उन कमजोरियों को भी उजागर करता है जिसके कारण लोगों की स्कूली शिक्षा तक पहुँच, उनकी सामाजिक आर्थिक असमानता, प्रौद्योगिकी तक पहुँच में अंतराल के मुद्दे, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विविधता के प्रति भेदभाव असमानता एवं असहिष्णुता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्रकाश डाला गया है।

विभिन्न देशों की वर्णित शिक्षा मॉडलों एवं उदाहरणों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं-

- शिक्षा प्रणाली लचीली, समावेशी, उत्तरदायी एवं भविष्योन्मुखी होनी चाहिए जिसमें औपचारिक, अनौपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से आजीवन सीखने के अवसर प्राप्त हो को शामिल किया जाय।

- स्वदेशी ज्ञान को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षा में स्वदेशी लोगों की भागीदारी तथा उनके अनुभव जन्म ज्ञान का व्यवहारिक अनुप्रयोगे अवलोकन, रिकवर्डिंग, एवं डेटा विश्लेषण, के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी को शामिल किया जाय।
- भविष्य की विकास सम्बंधी योजनाओं को तैयार करते समय स्थानीय एवं स्वदेशी लोगों की आवाजों को समानता तथा सम्मान का दर्जा प्रदान करना।
- बहुभाषीय एवं बहुसांस्कृतिक का उपयोग विविधता को एकता तथा समावेशन को बढ़ाता है।
- एकीकृत विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान को शामिल करने से व्यवहारिक समझ को प्रोत्साहित करता, तथा स्थानीय छात्रों के लिए सीखने के अवसरों में आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा नवाचार को बढ़ावा मिलता है उदाहरण के लिए सांस्कृतिक एटलस, सी०डी०, वेबसाइट एवं परियोजनाओं का निर्माण जैसे कार्य किये जा सकते हैं।

अभी तक हमने विभिन्न देशों की शिक्षा नीतियों एवं महडलों पर अध्ययन किया कि वे किस प्रकार से आधुनिक शिक्षा और पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान को किस प्रकार से एकीकृत करने का प्रयास कर रहे थे। अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० का विश्लेषण शुरू करते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

भारतीय ज्ञान प्रणाली वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धान्त पर आधारित है जो पूरी पृथ्वी को अपना परिवार मानता है और उसी के अनुरूप यह जीवन जीने का अनूठा तरीका भी सिखाता है, जिसमें सार्वभौमिक भाईचारे एवं समरसता पूर्ण जीवन के सभी पहलुओं के बीच संबंध को पहचानता है, और खुद से लेकर लोगों तक, लोगों से लेकर प्रकृति तक, समस्याओं से लेकर आध्यात्मिकता तक एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। विभिन्न भारतीय ज्ञान परम्पराओं जैसे- आयुर्वेद, योग और प्राणायाम में भी यह परिलक्षित होता है, जो पर्यावरण के साथ संतुलन और सामन्जस्य बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। परम्परागत ज्ञान का एक और महत्वपूर्ण पहलू अवलोकन और व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से ज्ञान की खोज करना है। यह दृष्टिकोण भारतीय संतों और प्राचीन विद्वानों की शिक्षाओं में परिलक्षित होता है, जो समझ और अंतर्दृष्टि के

आधार पर ध्यान और आत्म-प्रतिबिंब को प्रोत्साहित करते हैं। यह मौखिक संस्कृति के महत्व को भी उजागर करता है, जहाँ ज्ञान कहानी कहने, चर्चा और बहस के माध्यम से प्रसारित होता है। हिंदू धर्म के सबसे पुराने पवित्र ग्रंथ, वेद, इस अवधि के दौरान लिखे गए थे और इन्हें भारतीय ज्ञान और दर्शन की नींव माना जाता है। वेद उन गाथाओं, अनुष्ठानों, और मंत्रों का संग्रह हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से सदियों तक संचालित होते रहे हैं, इससे पहले कि उन्हें लिखित रूप दिया गया। इनमें अनुष्ठानों, बलिदानों, विश्वविज्ञान, नैतिकता, आध्यात्मिकता, और वास्तविकता के अंत का व्यापक ज्ञान है। ये ब्रह्मांड की अद्वितीयता और सार्वभौमिक चेतना के अस्तित्व में विश्वास को प्रदर्शित करते हैं।

ज्ञान की महत्वपूर्ण विचारधारा, बौद्ध धर्म, पहली सदी ईस्वी में उभरी और पूरे एशिया में फैली, जिसने भारतीय ज्ञान और विचार को प्रभावित किया। भारत के आगमन के बाद, भारतीय अनुभव को चुनौतियों का सामना करना पड़ा और इसने महत्वपूर्ण बदलावों का सामना किया। इस्लामी नेताओं ने अपनी संस्कृति और परंपराओं को लाया, और यूरोपियों ने पश्चिमी शिक्षा और विचारों को पेश किया, जिससे भारतीय और पश्चिमी विचारधाराओं के बीच एक संबंध बना। इन परिवर्तनों के बावजूद, भारतीय ज्ञान मजबूत और विकासशील है। १५वीं और १६वीं सदी का भक्ति आंदोलन भगवान के प्रति भक्ति और प्रेम को महत्व देता है, जबकि १५वीं सदी में सिख धर्म का उदय हिंदू धर्म और इस्लाम के तत्वों का संश्लेषण करता है। स्वतंत्र भारत के संस्थापकों ने देश की समृद्ध विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के महत्व को पहचाना। परिणामस्वरूप, भारतीय ज्ञान परम्परा को संरक्षित और विकसित करने के लिए कई संस्थान स्थापित किए गए, और प्राचीन ग्रंथों और सिद्धांतों को महान महत्व दिया गया। १९४७ में भारत की स्वतंत्रता के बाद, प्राचीन धार्मिक ग्रंथों और सिद्धांतों को शिक्षा और समाज में महान मूल्य मिला। भारतीय अनुभव से प्राप्त पारंपरिक ज्ञान। अनुसंधान और शिक्षा को विभिन्न विषयों में बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs), भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIMs) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) जैसी संस्थाएँ स्थापित की

गईं। आज, भारत का ज्ञान पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति का एक संयोजन है। भारतीय वैज्ञानिक संस्थाएँ विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, गणित, दर्शन, साहित्य और कला सहित कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य करना कर रहे हैं।

हाल के वर्षों में भारत की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण संगठनात्मक एवं संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं। वैश्विक चुनौतियों और परम्परिक ज्ञान को एकीकृत करने के लिए अंतर विषयक, एवं सह निर्माण पर जोर दिया गया है। जो स्वदेशी एवं परम्परागत ज्ञान जो सदियों में कला, विज्ञान, दर्शन, साहित्य और सामाजिक विज्ञान जैसे क्षेत्रों में विकसित हुआ है का वैज्ञानिक प्रमाणीकरण कर मुख्य धारा में शामिल करना है। यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और बौद्धिक इतिहास को दर्शाता है जो सरकार की हालिया शिक्षा सुधारों ने इस प्रक्रिया को बढ़ावा देने और आज की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) २०२० के कार्यान्वयन के साथ, सरकार ने पारंपरिक ज्ञान को मौजूदा पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए कदम उठाए हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा को शामिल करना आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत) को बढ़ावा देने के साथ-साथ भारत के बौद्धिक और सांस्कृतिक संसाधनों को विकसित करने में भी सहायक है।

आज की पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक और पारंपरिक प्रथाओं से अवगत तो है। लेकिन वे जानबूझकर केवल आधुनिक होने और खुद को अधिक शहरीकृत महसूस कराने के लिए उन प्रथाओं के संपर्क में रहने से बचते हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है, पारंपरिक ज्ञान के उचित संरक्षण के लिए हमारे युवाओं को उन प्रथाओं में शामिल रखना आवश्यक है जिसमें आत्म-सम्मान की भावना के साथ पारंपरिक ज्ञान, और सामान्य जीवनशैली में इसके लाभों के बारे में पूरी जागरूकता आवश्यक है। दूसरा, पारंपरिक ज्ञान, के लाभ एवं समझ केवल समुदाय के सदस्यों तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। बल्कि यह गैर-मूलनिवासियों तक भी पहुँचनी चाहिए ताकि वे समुदाय की भावनाओं और संवेदनाओं को पहचान सकें और उनका सम्मान कर सकें, तथा अपनी संस्कृति की प्रशंसा करने में सक्षम हो सकें। इस तरह की जागरूकता और आपसी सम्मान फैलाने का सबसे अच्छा तरीका शिक्षा

प्रणाली है, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० ऐसा ही एक प्रयास है। जो यूनेस्को की सतत विकास लक्ष्य ४ की प्रतिबद्धता को पूरा करते हुए, परम्परागत ज्ञान नैतिकता पर आधारित एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है जो भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली को परिवर्तन कर “सभी को उच्च-गुणवत्तायुक्त वाली शिक्षा प्रदान करके, एक समतामूलक और जीवंत ज्ञान समाज में परिवर्तन लाना, और इस प्रकार भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना” (एनईपी, २०२०)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०/शिक्षा प्रणाली में दिए गए प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित हैं-

१. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० भारत की समृद्ध विरासत को जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्वदेशी भाषा कला संस्कृति और दर्शन को शिक्षा में एकीकृत करके मान्यता देता है। जिसमें विरासत को संरक्षित, शोधित और नए तरीकों के माध्यम से उपयोग में लाए जाने पर जोर दिया गया है। प्राचीन भारतीय ज्ञान, विज्ञान और दर्शन को आधुनिक शिक्षा के साथ समाहित करने से छात्र अपनी ज्ञान परंपराओं से प्रेरित होंगे एवं अपनी जड़ों से जुड़े रहने के साथ छात्रों में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक, सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने एवं उनमें रचनात्मक एवं आलोचनात्मक सोच समस्या-समाधान और नवाचार के लिए भारतीय विधियों के उपयोग को प्रोत्साहित करना है। शिक्षा प्रणाली सभी जनसांख्यिकीय में समानता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच का लक्ष्य रखती हैं। यहाँ हाशिए पर पड़े वंचित समूहों को पहचानने पर विशेष जोर दिया गया है और सरकार ने इस शिक्षा प्रणाली में देश के हर वर्ग को समानता और सम्मान के साथ शामिल करने का प्रयास किया है। सभी वंचित समूहों की आवाज का प्रतिनिधित्व करने के लिए, पाठ्यक्रम “मानव संसाधन विकास मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और जनजातीय मामलों के सभी मंत्रालयों को संयुक्त रूप से शिक्षा मंत्रालय तैयार किया गया है, जो सभी स्तरों पर शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी पहुँच सुनिश्चित करती है।
२. इस नीति की सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें विज्ञान और कला के बीच कोई कठोर विभाजन नहीं

होगा, नीति (बहु-विषयक) शिक्षा को बढ़ावा देती है। इसका मतलब विज्ञान वर्ग का छात्र कला वर्ग के विषयों को भी चुन सकता है और विज्ञान वर्ग का छात्र भौतिकी के साथ इतिहास या संगीत की पढ़ाई कर सकता है। यानी यह नीति हर विषय को समान महत्व देती है। इसमें खेलों के एकीकरण गतिविधियाँ शामिल होंगी जिनमें स्वदेशी खेल, प्राचीन और आधुनिक साहित्य, फिल्म और संगीत, सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन के लिए एकीकरण किये गये हैं।

३. इस नीति में विभिन्न राज्यों केन्द्र शासित प्रदेशों के बीच सांस्कृतिक विविधता, भाषाई और स्थानीय के प्रति समझ एवं सम्मान की भावना विकसित करने के लिए, “एक भारत श्रेष्ठ भारत” का पहल किया गया है। इस कदम से भारत के परम्परागत ज्ञान को न केवल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलती है, बल्कि आधुनिक शिक्षण प्रणाली में प्राचीन ज्ञान और आधुनिक ज्ञान को शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है, जो जनजातीय ज्ञान, गणित एवं खगोल विज्ञान में सीखने के स्वदेशी एवं पारंपरिक तरीकों को प्रदान करता है। बच्चों को पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश और भारतीय परंपरा की अन्य रोचक दंतकथाओं और प्रेरक कहानियों को पढ़ने और सीखने का अवसर मिलेगा और वे वैश्विक साहित्य पर उनके प्रभावों के बारे में जानेंगे। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक समस्त पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को पुनः डिजाइन किया जा रहा है, जिसमें भारतीय संस्कृति, परंपराओं, विरासत, रीति-रिवाजों, भाषा, दर्शन, भूगोल, प्राचीन और समकालीन ज्ञान, सामाजिक और वैज्ञानिक आवश्यकताओं, सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों आदि के संदर्भ में भारतीय और स्थानीय संदर्भ और लोकाचार को समाहित किया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा हमारे छात्रों के लिए प्रासंगिक, आकर्षक और उपयोगी हो। कहानियों, कलाओं, खेलों, उदाहरणों, समस्याओं आदि को यथासंभव भारतीय और स्थानीय भौगोलिक संदर्भ में निहित करने के लिए चुना गया है, जिसमें विचार, अमूर्तता और रचनात्मकता वास्तव में सभी सबसे अच्छी तरह पनपेगी जब सीखने में मौलिकता निहित होगा।

मानविकी, विज्ञान, कला, शिल्प आदि में, जहां भी प्रासंगिक होगा, पाठ्यक्रम में पारंपरिक और आदिवासी ज्ञान का वास्तविक समावेश होगा स्थानीय व्यवसायों, ज्ञान जैसे स्थानीय कला, संगीत, कृषि, व्यवसाय, खेल, बढ़ईगरी और अन्य व्यावसायिक शिल्प कौशल को बढ़ावा देना इस इस शिक्षा नीति का हिस्सा है।

४. शिक्षण और अधिगम में बहुभाषिकता को बढ़ावा देने और स्थानीय भाषा को बढ़ावा देने के लिए, स्थानीय भाषा के जानकार शिक्षकों और सभी स्थानीय और भारतीय भाषाओं में शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रेरणादायक पुस्तकों को प्राथमिकता दी जाएगी, जिसके लिए राज्य सरकारें सहायता प्रदान करेंगी। बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए त्रिभाषा सूत्र बनाया गया है। चूंकि भारतीय भाषाएँ दुनिया की सबसे समृद्ध, सबसे वैज्ञानिक, सबसे सुंदर और सबसे अधिक अभिव्यंजक भाषाओं में से हैं, और इन भाषाओं में प्राचीन और आधुनिक साहित्य (गद्य और पद्य दोनों), फिल्म और संगीत का विशाल भंडार है, जो भारत की राष्ट्रीय पहचान और समृद्धि को आकार देने में सहायक हैं। सांस्कृतिक समृद्धि और राष्ट्रीय एकीकरण के उद्देश्य से सभी युवा भारतीयों को अपने देश की समृद्ध और विशाल भाषाओं एवं साहित्य के खजानों के बारे में पता होना चाहिए। इसी प्रकार संस्कृत ज्ञान को शिक्षण पद्धति में शामिल किया गया है। संस्कृत शिक्षक को संस्कृत ज्ञान प्रणालियों के माध्यम से, विशेष रूप से ध्वनि विज्ञान और उच्चारण के माध्यम से, रोचक, अनुभवात्मक और समकालीन प्रासंगिक तरीकों से पढ़ाएंगे। संस्कृत के माध्यम से संस्कृत पढ़ाने और इसके अध्ययन को वास्तव में आनंददायक बनाने के लिए, आधारभूत और माध्यमिक विद्यालय स्तर पर संस्कृत की पाठ्यपुस्तकें सरल मानक संस्कृत में लिखी जा सकती हैं। भाषा की बाधा को दूर करने या दूरस्थ क्षेत्रों तक ज्ञान प्रदान करने और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए व्यापक तकनीकी सहायता उपलब्ध होगी।

५. इस नीति का मुख्य उद्देश्य छात्रों में अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से स्थानीय भाषाओं एवं कौशल विकास के एकीकरण करना, जिसमें रटने की बजाय वैचारिक समझ विकसित कर आलोचनात्मकता

रचनात्मकता और समग्र विकास किया जा सके। इसके लिए प्रत्येक क्षेत्र के पेशेवर लोगो के कौशलों की पहचान कर उन्हें कौशलों को सीखाने के लिए एकीकृत किया जाये, जिससे सैद्धांतिक ज्ञान के साथ- साथ व्यवहारिक कौशलों के मेल से उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलेगा। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, एन.सी.ई.आर.टी. आवश्यक कौशल की पहचान करेगा और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे में संरचनात्मक एवं संगठनात्मक बदलाव कर कार्यान्वयन के लिए तंत्र शामिल करेगा। स्कूलों की आवश्यकता को कम प्रतिबंधात्मक बनाया जाएगा, इसकी पूर्ति के लिए, कुछ प्रावधान परंपराओं या शैक्षणिक शैलियों को संरक्षित करने के लिए स्कूलों के वैकल्पिक रूप प्रदान करते हैं। जिसमें स्थानीय समुदाय के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी और पूर्व छात्रों को स्वयंसेवा में शामिल करने के प्रयास किए जाएंगे। राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एन.आर.एफ.) द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान के लिए उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों और कारीगरों को अतिथि संकाय के रूप में नियुक्त करने के लिए धन उपलब्ध कराया जाएगा। “कलाकार छात्रों को उच्च शिक्षा संस्थान में कला और रचनात्मकता से अवगत करायेंगे। कला और संस्कृति को संरक्षित करने और उसे संवर्धित करने के लिए विभिन्न भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली विषय सामग्री विकसित करने और पर्यटन उद्योग को मजबूत करने के लिए मठों और पर्यटन स्थलों को चलाने के लिए उच्च योग्य लाभार्थियों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। नीति यह भी मानती है कि भारत की समृद्ध विविधता युक्त विरासत के ज्ञान को शिक्षार्थियों द्वारा सीधे आत्मसात किया जाना चाहिए। इसका मतलब होगा कि देश के विभिन्न हिस्सों में छात्रों द्वारा भ्रमण जैसी सरल गतिविधियाँ शामिल करना, जो पर्यटन को बढ़ावा देगा और भारत के अन्य हिस्सों की विविधता, संस्कृति परंपराओं और ज्ञान की समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देगा।

राष्ट्रीय शिक्षा २०२० के प्रमुख बिन्दुओं का विश्लेषण-

भारतीय समाज प्राचीन काल से ही विविध ज्ञान प्रणालियों परम्पराओं और प्रथाओं में उन्नत रहा है। जो

किसी भी एक मंत्रालय के लिए समुदाय के मूल्यों को बिना उनकी भागीदारी के मूल्यवान जानकारी एकत्र करना सम्भव नहीं है, और यह भागीदारी केवल पाठ्यक्रम निर्माण करने या शिक्षण पद्धति चुनने तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि निर्णय लेने वाली संस्थाओं में भी होनी चाहिए। शिक्षा मंत्रालयों में समुदाय के सदस्यों की भागीदारी होनी चाहिए। या जैसा कि हमने अहमदाबाद अनुभव से सीखा है, ऐसे शैक्षणिक संस्थानों में नियुक्तियों के लिए स्थानीय समुदाय के प्रतिनिधियों की पूर्व सहमति से उचित दिशा निर्देश होने चाहिए।

२. शिक्षा प्रणाली के माध्यम से बहुमुखी प्रतिभा वाले युवाओं की खोज करने में सहायक होगी। छात्रों को अपनी रुचि, रुझान, योग्यता एवं आवश्यकता के अनुरूप काम करने की धुन मिलेगी। वे वह करेंगे जो उन्हें पसंद है और कुछ नौकरी-उन्मुख विषय सीखकर अपना भविष्य सुरक्षित करेंगे। लेकिन इस सबसे अच्छे हिस्से से एक चिंता जुड़ी हुई है, कि प्रतिभाओं को आत्म-मूल्य साबित करने में साथियों के दबाव में विचलित नहीं होना चाहिए। साथ ही, स्थानीय विद्यार्थियों के पास अपनी रुचि के क्षेत्र चुनने के लिए अच्छे विकल्प होने चाहिए। छात्रों को उनकी विशेषताओं के अनुसार विषय चुनने के लिए प्रारंभिक चरण में उचित मार्गदर्शन करने के लिए एक स्कूल परामर्श प्रणाली होनी चाहिए, खासकर जब औद्योगिक शहरों का हिस्सा बनने की दौड़ में छात्रों के क्षेत्रों को बदलने की बात आती है, तो उन्हें उचित रूप से निर्देशित किया जाना चाहिए और स्वदेशी लाभकारी ज्ञान की उनकी विशेषता को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

३. शिक्षा प्रणाली में परम्परागत ज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा दोनों का एकीकरण करके बीच की खाई पाटने पर विशेष बल दिया गया है। जो स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में तकनीकी ज्ञान को शामिल करना नीति का एक और बेहतरीन एवं महत्वपूर्ण पहलू है। लेकिन सांस्कृतिक या पारंपरिक ज्ञान एक अलग विषय आज के पर्यावरण विषय की तरह बनकर तो नहीं रह जाएगा, क्योंकि यह अनिवार्य नहीं है, इस तरह का कदम विषय के महत्व को कम करता है। गणित विषय के साथ किसी अन्य कला वर्ग के विषयों को तकनीकी ज्ञान के शामिल करने से छात्रों में समस्याओं के समाधान करने में अधिक आसान और

स्वाभाविक तरीके से हो पायेगी एवं सीखने की जिज्ञासा भी पैदा होगी तथा अपनी या दूसरों की संस्कृति और परंपराओं के प्रति सम्मान की भावना पैदा होगी। किन्तु इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कोई भी नया पाठ्यक्रम शुरू करते समय, विषय चुनने वाले उम्मीदवारों को कैरियर बनाने का कुछ आश्वासन अवश्य होना चाहिए। एक ऐसा निकाय होना चाहिए जो इस बात का ध्यान रखे कि वचिंत या स्थानीय समुदायों का शोषण उनके अपने ही कुछ लोगों द्वारा न हो, जो व्यावसायिक लालच के लिए जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बेच देते हैं। इससे उनके आसपास के पर्यावरण को नुकसान पहुँच सकता है। शिक्षा के व्यावसायीकरण से उनका अपना अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

४. यह नीति भारत की विविधता को संरक्षित करने एवं बच्चों को अपनी मातृभाषा में शिक्षण और प्रशिक्षण अंग्रेजी भाषा जानने के बोझ को हल्का कर देगा तथा बच्चों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने में मदद मिलेगी। त्रि भाषा सूत्र दूसरे राज्यों की भाषा सीखने में मदद करेंगे। ये विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं को और करीब से समझने में भी मदद करेंगे ताकि आप उस संस्कृति की भावनाओं को उनकी कलाओं और जीवनशैली आदि के माध्यम से महसूस कर सकें। एक भाषा थोपने के बजाय, सीखने के मानदंडों में ढील देने से राष्ट्र की अखंडता को बढ़ावा मिलेगा। लेकिन कुछ चुनौतियां भी हैं जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में मातृभाषा में पढ़ाने वाले शिक्षकों की कमी, बुनियादी ढांचे एवं अनुवाद की समस्या, एवं राज्यों की आपसी सहमति।

५. शिक्षा नीति में छात्रों में ज्ञान कला कौशल को अर्जित करने के लिए, **करके सीखने** पर आधारित है जिसमें खेल आधारित शिक्षा एवं शारीरिक गतिविधियों को शामिल किया गया है जो रटने के बजाय प्रयोगों पर बल देता है। जिसमें व्यावहारिक अनुभवात्मक एवं समग्र शिक्षा पर जोर दिया गया है जो कक्षाओं में छात्रों के सीखने के दौरान नए कौशलों से परिचित कराया जाएगा, बल्कि उन्हें किसी विशेष क्षेत्र के व्यावहारिक पहलुओं को सीखने का भी अवसर मिलेगा। इसके लिए छात्रों को फील्ड ट्रिप, परियोजना, इंटरनशिप और वास्तविक दुनिया की

समस्याओं को हल करके रचनात्मक सोच का विकास होगा जो आजीवन सीखने की प्रेरणा मिलेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० की नीतियां निश्चित रूप से मील का पत्थर साबित होगी किन्तु कुछ चिन्ताएं भी हैं-

शिक्षा नीति के तहत विदेशी विश्वविद्यालयों के आगमन से शिक्षा के व्यावसायिक शोषण हो सकता है जिसका सबसे गरीब एवं मध्यम वर्ग कि छात्रों की शिक्षा पहुंच से दूर हो सकता है। इसे किसी भी स्तर पर व्यावसायिक शोषण से दूर रखा जाना चाहिए। शिक्षकों को नए तरीके से पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना एक बड़ी चुनौती है इसके अलावा बुनियादी ढांचे की कमी, खास ग्रामीण क्षेत्रों तक डिजिटल पहुंच का अभाव और छात्रों के लिए विभिन्न विषयों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है कई बार यह देखा गया है कि पर्यावरण विषय शिक्षकों और छात्रों की जिम्मेदारी न होकर यह केवल एक औपचारिकता बन गया है। वैसे नई शिक्षा प्रणाली को अनुकूलन करने में समय लग सकता है।

निष्कर्ष

विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० बहुलवादी संस्कृति को संरक्षित एवं सम्वर्धित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। यह समाज के जागरूक व्यक्तियों द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत को विकसित करने एवं समाज में उसे आगे बढ़ाने में मददगार साबित होगी। शिक्षा का पाठ्यक्रम स्थानीय भाषा में होने से पारम्परिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद मिलेगी। व्यावसायिक शिक्षा के साथ तकनीकी शिक्षा एवं बहुलवादी संस्कृति को शामिल करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कुछ मजबूत बिंदु पाए गए हैं। यह नीति निश्चित रूप से स्वदेशी लोगों या स्थानीय कलाकारों की उन्नति के लिए उन्हें नया मंच प्रदान करती है। जो पारम्परिक ज्ञान एवं समकालीन ज्ञान के समझ के अन्तर को कम करता है। लेकिन ऐसे क्षेत्रों में कोई भी कदम उठाने या किसी भी निर्णय को लागू करने से पहले उनकी जरूरतों, मांगों और अपेक्षाओं पर उचित ध्यान देना आवश्यक है। क्योंकि मूल निवासी केवल आर्थिक विकास की ही माँग नहीं करते, बल्कि उनकी आजीविका अच्छी तरह से जीवन जीने की

धारणा पर आधारित है, जो साझा मूल्यों और मानदंडों एवं समरसता पर आधारित है, जो समुदाय के वैचारिक मूल्यों, प्राकृतिक एवं वैश्विक समाज के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध, समानता व पूरकता की धारणा जैसे मूल्य निहित है। मूल निवासी बच्चों को अपनी योग्यताओं के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ, उन्हें अच्छी तरह से जीने के पहलुओं की भी शिक्षा देनी चाहिए। समुदायों की धारणाओं और भावनाओं का सम्मान किया जाना चाहिए और उनके हितों का ध्यान रखा जाना चाहिए। यह शिक्षा नीति वर्तमान वैश्विक प्रतिस्पर्धा की चुनौतियों के बीच एक भविष्योन्मुखी, समावेशी एवं देश की जरूरतों के अनुरूप लागू किया गया है। यदि वास्तविकता के धरातल पर उतरा तो यह शिक्षा नीति विकसित भारत बनने एवं पुराने गौरव को हासिल करने में एक वरदान साबित होगा।

संदर्भ सूची-

- 1- राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०, मानव संसाधन और विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- 2- २५ सितंबर (२०१५) को महासभा द्वारा अपनाया गया प्रस्ताव मुख्य समिति के संदर्भ के बिना (A/70/L.1)] 70/1. हमारी दुनिया को बदलना: सतत विकास के लिए २०३० एजेंडा, पृष्ठ 99 <https://www.un.org/ga/search/viewdoc.asp?symbol=A/RES/70/1&Lang=E>
- 3- संयुक्त राष्ट्र प्रणाली कार्य दल (२०१२), सभी के लिए वांछित भविष्य को साकार करना: महासचिव को रिपोर्ट। न्यूयॉर्क संयुक्त राष्ट्र, पृष्ठ २८
- 4- यूनेस्को, (२०१६) वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट, सभी लोगों के लिए शिक्षा: सभी के लिए स्थायी भविष्य का निर्माण, स्वदेशी ज्ञान और सतत विकास एजेंडा के लिए निहितार्थ पृष्ठ 92-93।
- 5- यूनेस्को (२००८). क्षेत्रीय और अंतर क्षेत्रीय स्तरों पर समावेशी शिक्षा के परिणाम और रुझान: मुद्दे और चुनौतियाँ।
- 6- आर्मीटेग, ए. (१९९५)। आदिवासी आत्मसात नीति की तुलना: ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैंड। *वैक्यूवः यूनिवर्सिटी अहफ ब्रिटिश कोलोबिया प्रेस।*

- 7- अग्रवाल, ए. (२००२), स्वदेशी ज्ञान और वर्गीकरण की राजनीति। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान जर्नल।
- 8- भारद्वाज, टी. (२०२१)। आधुनिक भारतीय शिक्षा और समाज के लिए भारत के ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करना। Retrieved from www.financialexpress.com:https://www.financialexpress.com/jobs career/education-reviving-indias-knowledge-systems-for-modern-indian-education-and-society 2376952/
- 9- ओगुन्नीयी, एम.बी.; २००७ उद्ध शोध रिपोर्ट: विज्ञान-स्वदेशी ज्ञान पाठ्यक्रम के बारे में शिक्षक का दृष्टिकोण और व्यावहारिक तर्क। अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा जर्नल, खंड २६ (१०), पृ. ११८६।
- 10- ऐकमैन, एस., (२०१०) अफ्रीका में शिक्षा और स्वदेशी न्याय। अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक विकास जर्नल, ३५(१), ०५६०-१६०७।
- 11- स्टावेनहेगन, आर. (२०१५) शिक्षा के लिए स्वदेशी लोगों के अधिकार। यूरोपीय शिक्षा जर्नल, ५०(३), २५४-२५७।
- 12- माशेलकर, आर. ए. (२००१) बौद्धिक संपदा अधिकार और तीसरी दुनिया, ८१ करंट साइंस, पृ. ६६०.
- 13- भारद्वाज, एस०एस० चौहान एस० रमन ए० (२०१५) भारतीय संगठनों में ज्ञान प्रबंधन क्षमताओं की प्रभावशीलता का प्रभाव। index.php/kdp/catalogdownload/415/506/3826online execes
- 14- अबिदा परवीन, एम.ए. (२०२२). यूनानी चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली, इसका मूल, विकास और भारतीयकरण: एक आलोचनात्मक मूल्यांकन। इंडियन जर्नल अहफ ट्रैडिशनल नहलेज, ५११-५२१।
- 15- सिंह, बी.ए. (२०२२). प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और आज की प्रासंगिकता Retrieved from indiafoundation.in:https://indiafoundation.in/articles